

रानी ब्रिटिया

2 :: रानी बिटिया

रानी बिटिया

लेखक

जहूर बख्श

सम्पादक

डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान



विकास प्रकाशन, कानपुर

मूल्य : साठ रुपए मात्र

पुस्तक	:	रानी बिटिया
लेखक	:	जहूर बख्श
सम्पादक	:	डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान
प्रकाशक	:	विकास प्रकाशन 311 सी., विश्व बैंक बर्रा, कानपुर-208027
संस्करण	:	प्र.सं. 1994 वि.
संस्करण	:	2026 ई.
आवरण-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
शब्द-सज्जा	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मुद्रक	:	छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर
मूल्य	:	60/-
ISBN	:	978-93-47390-53-1

भूमिका

हिंदी बालसाहित्य का मुख्य ध्येय केवल बाल-पाठकों का क्षणिक मनोरंजन करना मात्र नहीं रहा है, अपितु उनके अवचेतन और अंतश्चेतना का परिष्कार करते हुए उनमें रागात्मकता, संवेदनशीलता, जिज्ञासा, अदम्य साहस एवं उदात्त जीवन-मूल्यों का बीजारोपण करना रहा है। बालसाहित्य की कसौटी पर वही कृतियाँ कालातीत सिद्ध होती हैं, जो बाल-मनोविज्ञान की सूक्ष्म परतों को उघाड़ते हुए उन्हें एक व्यापक जीवन-दृष्टि प्रदान करने में समर्थ होती हैं। इस साहित्यिक निकष पर खरी उतरने वाली ऐसी ही एक विलक्षण एवं ऐतिहासिक कथाकृति है-‘रानी बिटिया’, जिसके सर्जक विगत युग के मूर्धन्य एवं बहुचर्चित कथाकार ज़हूर बख्श जी हैं। सुगठित कथा-शिल्प, चरित्रों की जीवंत व सक्रिय उपस्थिति, कथानुकूल प्रसंगात्मक ताना-बाना और पात्रों के सूक्ष्म अंतर्जगत का प्रांजल चित्रण ये तमाम चीजें इसे एक सामान्य बाल-कथा की परिधि से निकालकर उत्कृष्ट औपन्यासिक साहित्य की कोटि में स्थापित करती हैं।

बाल-औपन्यासिक कथा-विन्यास और शिल्प की दृष्टि से ‘रानी बिटिया’ को मात्र एक ‘बाल-कहानी’ न मानकर ‘बाल-उपन्यास’ की विधा में समाविष्ट करना ही सर्वाधिक तर्कसंगत, प्रासंगिक एवं व्यावहारिक प्रतीत होता है। सैद्धांतिक आधार पर देखें तो कहानी प्रायः परिमित पात्रों, किसी एक मुख्य घटना, सघन भाव-क्षण या विशिष्ट प्रसंग को केंद्र में रखकर रची जाती है, जबकि उपन्यास में कथा का सुदीर्घ विस्तार, विविध घटना-प्रसंगों की अंतरंग शृंखला, बहुआयामी चरित्रों की अवस्थिति, उनके परस्पर विकसित होते संबंध तथा विस्तृत जीवन-संदर्भों की अभिव्यक्ति होती है। इस दृष्टि से ‘रानी बिटिया’ का कथानक किसी एक

सीमित वृत्त में आबद्ध न रहकर क्रमशः परिपक्व व संवर्धित होता है। इसमें अनेक पात्रों की सजीव भूमिकाएँ हैं, क्रमबद्ध एवं गतिमान घटनाक्रम हैं और ये सभी घटक परस्पर इस प्रकार अंतर्ग्रथित हैं कि संपूर्ण रचना में एक अनूठा औपन्यासिक कसाव और प्रवाह निर्मित होता है।

इस कृति का एक महत्वपूर्ण एवं सराहनीय पक्ष यह भी है कि इसमें बाल-पाठकों को कथा-प्रवाह के साथ सक्रिय और तादात्म्यपरक रूप से जोड़ने का अत्यंत सुंदर प्रयास दिखाई देता है। पात्रों के जीवंत अनुभव, उनके समक्ष उपस्थित होने वाली जटिल परिस्थितियाँ और विविध घटनाक्रम बाल-पाठकों में कथा के आगामी मोड़ों को जानने की उत्सुकता व कौतूहल निरंतर बनाए रखते हैं। यह सहज आकर्षण रचयिता के अद्भुत कथा-सामर्थ्य और सिद्धहस्त शिल्प का ही परिणाम है। भाषा की स्वाभाविकता, सहजता और परिमार्जित सौष्ठव, पात्रों के मनोभावों की प्रामाणिक अभिव्यक्ति तथा कथा का अनुपातिक रचाव ज़हूर बख्श की कथा-दृष्टि और लेखन-कौशल की अद्वितीय क्षमता का परिचायक है।

इस पुस्तक के पुनः प्रकाशन का मूल उद्देश्य कथाकार ज़हूर बख्श के इस अविस्मरणीय एवं महत्वपूर्ण सृजनात्मक अवदान से न केवल आज के पाठकों को परिचित कराना है, बल्कि बाल-कथा साहित्य के इतिहास में इस अनमोल कृति को उसका न्यायसंगत स्थान दिलाते हुए पुनर्स्थापित करना भी है। इसके पुनरुद्धार के माध्यम से अतीत के समृद्ध साहित्यिक योगदान और वर्तमान के पठन-संस्कृति के मध्य एक सुदृढ़ वैचारिक व साहित्यिक संवाद सेतु का निर्माण करना हमारा प्रमुख ध्येय रहा है।

मुझे उम्मीद है कि 'रानी बिटिया' हिंदी बालसाहित्य के मर्मज्ञों, विद्वानों, अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए अनुशीलन, चिंतन और समीक्षा का एक नया आयाम प्रस्तुत करेगी। बालसाहित्य के अनुरागी एवं सुधी पाठक बालसाहित्य के निष्पक्ष अध्ययन और मूल्यांकन की दिशा में किए गए इस सार्थक प्रयास का स्वागत करेंगे।

अलीगढ़

फीरोज़

01.10.2026